पावनता की पावन गंगा बहायें...

''हम सारे विश्व में पावनता की गंगा बहायेंगे'' – ये गौरव पूर्ण शब्द थे उस एक सुशिक्षित पवित्र कन्या के, जिसने संसार में माया के सूर्य को अस्त करने का मनोबल धारण किया था। ये शब्द सुनकर मन गद्‌गद् हो उठा कि किसने इन, कलियुग के तमोप्रधान वातावरण में पली कन्याओं को इतना आत्म-विश्वास प्रदान किया! किसने इनके मन में पावनता के बीज अंकुरित किये! और किसने इन्हें माया को चुनौती देने का साहस दिया... हमें अच्छी तरह ज्ञात है कि पवित्रता के सागर की दृष्टि जिन पर पड़ चुकी, जिन्होंने अपने मन का मीत सर्वशक्तिवान को बना लिया, जिन्होंने द्वार पर आये भाग्य को पहचान कर उसे स्वीकार किया, उन्हें ही ये बल प्राप्त हुआ।

फिर उस योगिनी ने कहा –``जबकि संसार में चारो ओर विकारों की बाढ़ सी आ गई है, जिसमें सभी नर,नारी, साधु-सन्यासी बह चले हैं। जबकि अनेक दुःशासन अबलाओं के चीर हरण कर रहे हैं.... जबकि कंस प्रवृत्ति चहूँ ओर अपना आधिपत्य जमा रही है... दानवता अपना नग्न नृत्य कर रही है, हम पवित्र कन्याएँ विश्व में पवित्रता की सरिता बहाकर इस बाढ़ को शान्त करेंगी।''

उसने अपनी मन धारा को प्रवाहित करते हुए बोला – ``जबकि विश्व में चारो ओर हिंसा ने अहिंसा को ललकारा है, अहिंसा परमोधर्म का नारा लगाने वाले धर्मों ने हिंसा परमधर्म का हथियार सम्भाला है, जबकि अनेक निर्दोष लोगों के रक्त से धरती का आँचल सना हुआ है और प्रत्येक मानव अपने को असुरक्षित अनुभव कर रहा है- ऐसे दुष्काल में हम स्नेह की सरिता बहाकर सबको मानवता सिखलायेंगी। कितने प्रेरणादायक और महान इरादे हैं उनके, और ऐसे ही वत्सों के साथ भगवान का बल होता है। और यह भी सम्पूर्ण सत्य है कि वे सतत् पवित्रता की चेतन प्रति मूर्ति बन कर समस्त आसुरी सम्पदा को अपने चरणों में झुकने को बाध्य कर देंगी।

कलियुग के इस डरावने अंधकार में जहाँ मनुष्य को कहीं भी प्रकाश की किरण दिखाई नहीं देती, चारो ओर अनेक दीपक जले हैं, जिनका प्रकाश शीघ्र ही इस भयावह अंधकार को दूर करेगा। ये दीपक हैं, वे ब्रह्मावत्स, जिन्होंने मन में पवित्रता की ज्योति जगाई है और वे वत्स इस दीपक में ज्ञान-योग का घृत डालकर शीघ्र ही इसकी लौ को इतना ऊंचा कर देंगे कि समस्त विश्व उसे देख सके और उससे प्रकाशित हो सके।

कैसे इन छोटी-छोटी कन्याओं ने, गृहस्थ जाल में फंसी माताओं ने और अनेक युवा पुरुषों ने इस कठिन तप को अपना लिया। लोगों को विश्वास नहीं होता। इसी तप के लिए जंगलों में खाक छानते जटाधारी साधू इसे कल्पना कहकर स्वयं को भटकन में ही पड़े रहने देना चाहते हैं। कोई तो इसे असम्भव कहकर आगे बढ़ने का साहस ही नहीं करते । कोई पवित्रता को प्रकृति के प्रतिकूल मानकर इसे अस्वाभाविक प्रवृत्ति या प्रकृति से युद्ध या प्रकृति के नियमों के विरुद्ध कहकर इसकी महानता को ही स्वीकार नहीं करते। उन्हें पता ही नहीं कि अपवित्रता और पवित्रता का सम्बन्ध प्रकृति से नहीं आत्मा से है। काम की कामना या पवित्रता की भावना आत्मा को होती है न कि प्रकृति को और पवित्रता ही आत्मा का मूल एवं सत्य स्वभाव है। फिर कौन है इन

ब्रह्मा वत्सों के पीछे और क्यों इन्होंने संसार की विषय वैतरणी नदी में बहना स्वीकार नहीं किया ... इससे श्रेष्ठ क्या मिला इन्हें जो इन्होंने इस तामस और अन्ते दुःखदाई सुख का परित्याग कर दिया। इन्हें मिला सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय सुख और अतीन्द्रिय सुख... इन्हें मिला प्रभु-मिलन का अनुपम रस... इन्हें मिला स्व पर राज्य करने का सम्पूर्ण अधिकार... और भविष्य में इन्हें मिलता है अटल देव पद...

पवित्रता समय का वरदान है

अंधकार सदा ही तो नहीं रहता और भला ज्ञान सूर्य की सृष्टि पर अंधकार का साम्राज्य हो भी कैसे सकता है... उसका अंत होगा, और शीघ्र ही होगा। ये वही तो समय है जबकि अंधकार की सघनता समाप्ति की ओर है। इस प्रभात के पावन संगम काल में जो आत्माएँ पावनता की गंगा में स्नान करना चाहती हैं, उनके लिए मार्ग खुला है। क्योंकि स्वयं भगवान ने इस समय को वरदान दिया है। जो भी आत्मा पावन होना चाहे, प्रभु की शरण आये और वरदान प्राप्त करे परन्तु कैसी विडम्बना है कि जो लोग हज़ारों वर्षों से पुकारते रहे कि हे पतित-पावन आओ, हमें पावन बनाओ, उनकी पुकार सुनकर जब पतित-पावन प्रभु उन्हें पावन बनाने के लिए पुकार रहे हैं, तो वे प्रभु की पुकार भी नहीं सुनते।

ये वही शास्त्र-चर्चित देवियाँ हैं

हम भारतवासी पावन थे, सम्पूर्ण भारत ही पावन था। जिन देवी-देवताओं के मंदिरों से ही पवित्रता को अपनाना पड़ता है.... जिनके पुजारी-सन्यासी भी पवित्रता को अपनाना चाहते हैं, भला सोचो कि वे स्वयं कितने पावन होंगे। तो वही देवियाँ पुनर्जन्म लेते-लेते पुनः यहाँ पहुँची हैं और वे पुनः वही देव पद पाने के लिए योग-तपस्या कर रही हैं। इसीलिए सहज भाव से ही उन्होंने पवित्रता को अपना लिया। क्योंकि वे तो थीं ही पवित्रता की देवियाँ। उन्हें यह एहसास हो गया कि हम ही वे थे... और इस अनुभव के बाद पवित्रता को अपनाना कठिन नहीं रह जाता।

हमारे मन कैसे हों?

अब हम ब्रह्मा-वत्सों को पुनः इस धरा पर पवित्रता का सूर्य चमकाना है। पवित्रता के बल के बिना सभी निर्बल हो चुके हैं, संसार मानो शक्तिहीन हो चुका है और प्रकृति के अधीन होता जा रहा है। ऐसी विकट परिस्थिति में, जबकि चारो ओर काम के ज्वालामुखी फट रहे हैं, प्रत्येक मन में तनाव व अशान्ति की अग्नि जल रही है, काम-पीड़ा से दुःखी मनुष्य शीतल छाया की खोज में भटक रहा है, हम ज़िम्मेदार आत्माओं के मन कितने निर्मल, कितने शीतल व कितने शक्तिशाली हों। हमारा प्रत्येक संकल्प सृष्टि के लिए पावनता का वरदान हो, हमारा प्रत्येक संकल्प निर्बलों का सहारा हो... हमारा प्रत्येक संकल्प काम-अग्नि पर शीतल जल के छींटे छिड़कने समान हो... हमारा प्रत्येक संकल्प अनेक आत्माओं पर उपकार करने वाला हो। हमारा मन संसार में पवित्रता के प्रकम्पन भी तभी फैलायेगा, जबकि मन पवित्रता के सागर से जुड़ा होगा। इस प्रकार ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा, व अहं से रहित मन वाले ही धरा पर पावनता की गंगा बहायेंगे।

युवा काल में सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य – एक महान आश्चर्य

सत्य है, परन्तु आश्चर्य भी कि हम में से कई ब्रह्मा-वत्सों ने अपने युवा काल में ही सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य की स्थिति प्राप्त कर ली है। यह कैसे हुई? ईश्वरीय वरदान से या स्वयं के योग-अभ्यास से? दोनों से ही। यह स्थिति संसार के विचारकों, सन्तों और मनोवैज्ञानिकों के लिए सुंदर चुनौती है। हो भी क्यों न... हमने ही तो यह चुनौती भरा पथ स्वीकार किया था। इस स्थिति तक पहुँचने के लिए पुरुषार्थी को श्रेष्ठ संकल्पों की पालना से व्यर्थ के वेग को समाप्त करना होता है, दृढ़ संकल्प करें।

राँची-झारखण्ड। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए प्रसिद्ध लेखिका व प्रो. यशोधरा राठोड़, ब्र.कु. निर्मला व हाईकोर्ट के वाइस प्रेसिडेंट मुकेश सिन्हा।

अबोहर-पंजाब। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत पंचायत समिति में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अतिरिक्त उपायुक्त चरणदेव सिंह मान, विधायक गुरतेज सिंह घुडियाना, ब्र.कु. पुष्पलता, ब्र.कु. दर्शना, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

बोंगईगाँव-असम। राजमेला में आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी में लोगों को प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु. भाई बहनें। मंचासीन हैं ब्र.कु. लोनी व अन्य।

सिवान-बिहार। सेवाकेन्द्र के 20वें वार्षिकोत्सव पर दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. पी.के. गिरी, मुखिया जी, ब्र.कु. सुधा व अन्य।

पटना-बिहार। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड में 'राजयोग एंड ह्यूमन वैल्यूज़' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मृदुल। सभा में उपस्थित हैं आर.एस. दहिया,जेनरल मैनेजर,आई.ओ.सी., एम.पी. तिवारी,डी.जी.एम.,सी.ओ.,नई दिल्ली, एन.नाथ, डी.जी.एम.,ई.आर.ओ.,कोलकाता, वीणा कुमार,मैनेजर,एच.आर.बी.एस.ओ. व अन्य।

पुर्णिया-बिहार। केन्द्रीय कारागृह में 'तनावमुक्त जीवन के लिए राजयोग प्रशिक्षण' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मुकुटमणि। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता, कारागार अधीक्षक जवाहर प्रभाकर व अन्य।

सारनाथ-वाराणसी। फ्री आई चेकप व नेचरोपैथी कैम्प का उद्‌घाटन करते हुए डॉ. वेणीमाधव। साथ हैं प्रिन्सीपल,महाबोधी इंटर कॉलेज, सभासद् अजय जैन, डॉ.अखिलेश पाण्डे, ब्र.कु.विपिन, ब्र.कु.मोहन, ब्र.कु.प्रभा, ब्र.कु. तपोशी व अन्य।

हेतउदा-नेपाल। मकवानपुर होटल एसोसिएशन के नवनिर्वाचित सदस्यों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुशीला व ब्र.कु. रेवती।